सामाजिक व्यवहारों के विकास या अर्जन एवं उनकी अभिव्यक्ति में संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ऐसी प्रक्रियाएँ ही व्यक्ति को उसके परिवेश के साथ सामंजस्य एवं समझ विकसित करने में सहायक होती है। संज्ञानात्मक योग्यता का विकास सामाजिक अधिगम, अनुभव एवं अन्तक्रिया पर निर्भर करता है। संज्ञान एक व्यापक शब्द है। इसमें प्रत्यक्षीकरण तथा ज्ञान अर्जित करने की अन्य प्रकार की सभी योग्यताएं सम्मिलित है।

Meaning of cognition

हिल्गार्ड इत्यादि (1975) के अनुसार, कोई व्यक्ति स्वयं अपने बारे में तथा अपने परिवेश के बारे में जो विचार, ज्ञान व्याख्या, समझ (विचार) रखता है। उसे संज्ञान कहते है

~~Cognic is a General term covering all the various~~

~~Various~~

cognition is an individual' thought, knowledge, interpretation. or ideas about himself and his environment.

जेम्स ड्रेवर (1968) के अनुसार - संज्ञान एक ऐसा व्यापक शब्द है जिसमें जानने, प्रत्यक्षीकरण करने, स्मरण करने, कल्पना करने निर्णय करने एवं तर्क करने सम्बन्धी विभिन्न प्रकार के प्रक्रम सम्मिलित है।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि संज्ञान काफी व्यापक है। अपने तथा परिवेश के बारे में व्यक्ति की समझ ही संज्ञान इसपर सामाजिक अधिगम, ज्ञानात्मक प्रक्रियाओं एवं वैयक्तिक भिन्नताओं का स्पष्ट रूप से प्रभाव पड़ता है। संक्षेप में संज्ञान के बारे में कुछ निष्कर्ष निम्नलिखित है —

1. यह विकासात्मक प्रक्रिया है।
2. इस पर सामाजिक
3. इसमें चिन्तन, स्मरण, कल्पना एवं पूर्वानुभव आदि सम्मिलित है (4) यह परिवर्तनशील होता है
5. संज्ञान के विकास तथा संगठन में चयनात्मकता पाई जाती है
6. इस पर वैयक्तिक भिन्नताओं का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है।

पत्र सुन्दर सार गर्भित प्यारे सुझाव मिल गया जानकर हर्ष कुशलता फूल सा दिल खिल गया